BA I st year

UNIT - I st Book - Introduction to Basic Concepts of Sociology

समाजशास्त्र - अर्थ, प्रकृति क्षेत्र

विज्ञान का अर्थ → किसी भी विषय के क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है विज्ञान को अध्ययन की एक विशिष्ट पद्धति माना जाता है, जिसके निश्चित चरण होते हैं।

ग्रीन के अनुसार — "विज्ञान अनुसन्धान की पद्धति है।"

कार्ल पियर्सन के अनुसार — "समस्त विज्ञान की एकता उसकी प्रणाली में है न कि उसकी विषय वस्तु में।"

विशेषता

1. विशिष्ट पद्धति
2. क्या है का अध्ययन
3. प्रमाणित ज्ञान
4. वर्गीकरण एवं विश्लेषण
5. कार्यकारण सम्बन्धों की व्याख्या
6. सामान्यीकरण
7. सिद्धान्तों की पुर्नपरीक्षा
8. पूर्वानुमान

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

समाजशास्त्र को विज्ञान कहे जाने के पक्ष में तर्क

1. समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग होता है।
2. समाजशास्त्र यथार्थवादी है।
3. समाजशास्त्र के सिद्धान्त सार्वभौमिक है।
4. समाजशास्त्र का स्वरूप तार्किक है।

⑤ समाजशास्त्र में अवलोकन द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाता है।
⑥ समाजशास्त्र के सिद्धान्त प्रमाणिक है।
⑦ समाजशास्त्र कार्यकारण सम्बन्धों की स्थापना करता है।
⑧ समाजशास्त्र भविष्यवाणी करता है।

समाजशास्त्र को विज्ञान कहे जाने के विपक्ष में तर्क

① प्रयोगशाला का अभाव
② सामाजिक घटनाओं की जटिलता एवं परिवर्तनशीलता
③ तटस्थ दृष्टिकोण का अभाव
④ मापन की कठिनाईयाँ
⑤ सार्वभौमिकता की कमी
⑥ यथार्थता का अभाव
⑦ भविष्यवाणी करने में असमर्थ

भारतीय समाज में समाजशास्त्र का महत्व

① प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण के विकास में सहायक
② भारतीय ग्रामोत्थान में सहायक
③ औद्योगिक समस्याओं के हल में सहायक
④ जाति प्रथा के उन्मूलन में सहायक
⑤ अपराधी प्रवृति पर नियन्त्रण में सहायक
⑥ राष्ट्रीय एकता बनाए रखने में सहायक
⑦ जनजातियों की समस्याओं के निदान में सहायक

(8) सामाजिक सन्तुलन स्थापित करने में सहायक

मानवीय उन्मुखीकरण → सामाजिक यथार्थता को समझने का एक दृष्टिकोण है जिसके द्वारा अध्ययनकर्ता अपने चारों ओर के सामाजिक जगत को अर्थ प्रदान करता है तथा प्रथम व्यक्ति दृष्टिकोण द्वारा इस विश्व को आँकने एवं मूल्यांकन करने का प्रयास करता है यह यथार्थता को समझने की व्याख्यात्मक बोध की प्रकृति है। इसमें गुणात्मक विश्लेषण पर बल दिया जाता है, तथा समाजोपयोगी ज्ञान सृजित करने का प्रयास किया जाता है, ताकि मानवीय दुःखों को कम किया जा सके।

वैज्ञानिक भावना → अनुसन्धान कार्य में केवल विषय से सम्बन्धित ज्ञान व सामग्री का ही महत्वपूर्ण स्थान नहीं है जब तक एक वैज्ञानिक की वैज्ञानिक पद्धति के प्रति कोई रुचि न हो, तब तक वह अनुसन्धान कार्य में कोई सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। विज्ञान के प्रति रुचि रखने की तथा वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार खोज करने की भावना को ही वैज्ञानिक भावना कहते हैं।

समाजशास्त्र का समन्वयात्मक सम्प्रदाय → विशिष्टवादी सम्प्रदाय के विपरीत, समन्वयात्मक सम्प्रदाय के समर्थक विद्वान समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान अर्थात् अन्य विशिष्ट विज्ञानों का समन्वय मात्र मानते हैं फ्रांसीसी तथा अंग्रेज समाजशास्त्री मुख्यरूप से सम्प्रदाय के समर्थक हैं दुर्खीम, हॉबहाउस, सोरोकिन, जिन्सबर्ग, औरवानी वार्ड इत्यादि विद्वानों के समर्थक हैं। इस मत के समर्थक समाजशास्त्र को विज्ञानों का विज्ञान मानते हैं। इनके अनुसार समाज के सभी भाग परस्पर सम्बन्धित हैं तथा एक भाग में परिवर्तन, अन्य भागों में भी परिवर्तन कर देता है।

MANAGEMENT TECHNOLOGY BULANDSHAHR

समाजशास्त्र क्या है?	समाजशास्त्र क्या नहीं है?
① सामाजिक विज्ञान	प्राकृतिक विज्ञान
② तथ्यात्मक या वास्तविक विज्ञान	आदर्शात्मक विज्ञान
③ अमूर्त विज्ञान	मूर्त विज्ञान
④ विशुद्ध विज्ञान	व्यावहारिक विज्ञान
⑤ सामान्य विज्ञान	विशिष्ट विज्ञान
⑥ तार्किक व आनुभविक	

विशेषात्मक या स्वरूपात्मक सम्प्रदाय → समर्थक सिमेल, स्पार्ड, वॉन वीज, स्टेम्लर, रॉस, वेबर, वीरकान्त आदि। ये समाजशास्त्र को विशेष विज्ञान मानते हैं। इस सम्प्रदाय के समर्थक समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र वैसा ही निश्चित तथा परिसीमित कर देना चाहते हैं।

आलोचना →

① समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के सूक्ष्म तथा अमूर्त स्वरूपों के अध्ययन तक ही सीमित नहीं है।
② स्वरूप और अन्तर्वस्तु दो पृथक वस्तुएँ नहीं हैं।
③ स्वरूपों का अध्ययन अन्य विज्ञानों में भी होता है।
④ शुद्ध समाजशास्त्र की धारणा अव्यावहारिक है।
⑤ समाज के सदस्यों को कम महत्व देना उचित नहीं है।
⑥ समाजशास्त्र के क्षेत्र को अत्यधिक संकुचित कर दिया है।
⑦ समाजशास्त्र की मौलिक प्रकृति के विरुद्ध
⑧ सूक्ष्म और अमूर्त स्वरूपों का अध्ययन लाभदायक नहीं।

UNIT - II

समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञान

समाजशास्त्र और मानवशास्त्र का सम्बन्ध → मानवशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जिसमें मानव एवं उसके सम्पूर्ण कार्यों का अध्ययन किया जाता है। इसकी तीन शाखाएँ हैं – शारीरिक मानवशास्त्र, सामाजिक मानवशास्त्र, सांस्कृतिक मानवशास्त्र इसमें सामाजिक मानवशास्त्र लोकप्रिय शाखा है। मानवशास्त्र दो शब्दों एन्थ्रोपोस + लोजी से मिलकर बना है एन्थ्रोपोस का अर्थ है मानव लोजी का अर्थ है शास्त्र अथवा अध्ययन मानवशास्त्र का शाब्दिक अर्थ मानव का शास्त्र अथवा अध्ययन है।

क्रोबर के अनुसार → "मानवशास्त्र मनुष्यों के समूहों तथा उनके व्यवहार और उत्पादन का विज्ञान है।"

मजूमदार एवं मदन के अनुसार → "मानवशास्त्र समाज के उद्भव एवं विकास का शारीरिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से अध्ययन करता है।"

मानवशास्त्र की प्रकृति के सम्बन्ध में तीन बातें।

① सामाजिक मानवशास्त्र केवल आदिम समाजों का ही अध्ययन नहीं है
② सामाजिक मानवशास्त्र सम्पूर्ण संस्कृति का अध्ययन नहीं है।
③ सामाजिक मानवशास्त्र सम्पूर्ण समाज का अध्ययन नहीं है।

अन्तर → ① समाजशास्त्र का दृष्टिकोण सामाजिक है मानवशास्त्र का दृष्टिकोण सामाजिक एवं मानवशास्त्रीय दोनों है।
② समाजशास्त्र में, प्रश्नावली, अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची वैयक्तिक अध्ययन आँकड़ो का संकलन किया जाता है, सामाजिक मानवशास्त्र में अवलोकन को प्राथमिकता दी जाती है।
③ समाजशास्त्र में वस्तुनिष्ठता पाई जाती है मानवशास्त्र में कम वस्तुनिष्ठता पाई जाती है।
④ समाजशास्त्र की तुलना में मानवशास्त्री द्वारा किया गया

समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र → अर्थशास्त्र आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन है इसमें उत्पादन, वितरण एवं उपभोग का अध्ययन किया जाता है।

मार्शल के अनुसार - "अर्थशास्त्र मनुष्य के धनोपार्जन के दृष्टिकोण से मनुष्य जाति का अध्ययन है।"

समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र का सम्बन्ध → अर्थशास्त्र का मुख्य विषय सम्पत्ति एवं आर्थिक क्रियाएँ हैं इसमें मुख्य रूप से इस बात पर विचार किया जाता है कि सम्पत्ति का अर्जन किस प्रकार किया जा सकता है। उससे सम्बन्धित विभिन्न नियम क्या-2 हैं।

थॉमस के अनुसार - "वास्तव में अर्थशास्त्र समाजशास्त्र के विस्तृत विज्ञान की एक शाखा है।"

अन्तर → ① समाजशास्त्र में सामाजिक सम्बन्धों का सम्पूर्ण रूप से अध्ययन किया जाता है परन्तु अर्थशास्त्र में केवल आर्थिक सम्बन्धों का ही अध्ययन किया जाता है,

② समाजशास्त्र के क्षेत्र में सम्पूर्ण समाज सम्मिलित है जबकि अर्थशास्त्र में केवल इसका आर्थिक पक्ष ही सम्मिलित है,

③ समाजशास्त्र एक सामान्य सामाजिक विज्ञान है जबकि अर्थशास्त्र एक विशिष्ट सामाजिक विज्ञान है।

④ समाजशास्त्र में समाज का अध्ययन किया जाता है उसकी इकाई समूह है परन्तु अर्थशास्त्र की इकाई मनुष्य है आर्थिक पक्ष की विवेचना की जाती है।

समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र (विज्ञान) → राजनीतिक विज्ञान अंग्रेजी भाषा के शब्द पॉलिटिकल साइंस का हिन्दी अनुवाद है, तथा पॉलिटिक्स शब्द यूनानी भाषा के पोलिस शब्द से बना है जिसका अर्थ उस भाषा में नगर अथवा नगर-राज्य होता है, प्राचीन काल में

यूनान छोटे-२ नगर राज्यों में विभक्त था।

जैनेट के अनुसार → "राजनीतिशास्त्र विज्ञान का वह भाग है जिसमें राज्य के आधार तथा शासन के सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है।"

समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र का परस्पर सम्बन्ध → राजनीति शास्त्र एक विशेष प्रकार का सामाजिक विज्ञान है जो व्यक्ति के उस राजनीतिक जीवन का अध्ययन करता है जो सम्पूर्ण जीवन का अंग है यह विषय समाज की एक विशेष संगठित राजनीतिक इकाई में रुचि रखता है जिसे राज्य कहा जाता है। राज्य का मानव जीवन से अप्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।

अन्तर → ① राजनीतिशास्त्र में केवल उन नियमों का अध्ययन किया जाता है जिन्हें राज्य द्वारा स्वीकार किया जाता है जबकि समाजशास्त्र में सामाजिक नियन्त्रण के समस्त साधनों का भी अध्ययन किया जाता है।

② समाजशास्त्र व्यक्ति के चेतन और अचेतन दोनों प्रकार के व्यवहार से सम्बन्धित है। परन्तु राजनीतिशास्त्र केवल चेतन व्यवहार से सम्बन्धित है।

③ समाजशास्त्र संगठित तथा असंगठित दोनों प्रकार के समुदायों का अध्ययन करता है परन्तु राजनीतिशास्त्र का सम्बन्ध केवल संगठित समुदायों और समाजों का अध्ययन करना ही है।

समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान में अन्तर → ① मनोविज्ञान का दृष्टिकोण वैयक्तिक है जबकि समाजशास्त्र का दृष्टिकोण सामूहिक है।

② मनोविज्ञान की इकाई व्यक्ति है जबकि समाजशास्त्र में समूह को इकाई माना जाता है।

③ मनोविज्ञान में मुख्य रूप से प्रयोगात्मक और विकासात्मक पद्धतियों को अपनाया जाता है जबकि समाजशास्त्र में अन्य पद्धतियों को अधिक अपनाया जाता है।

समाजशास्त्र व इतिहास का सम्बन्ध → इसमें मानवजाति के कार्यों का अध्ययन किया जाता है तथा उनका विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इसमें भूतकालीन घटनाओं का निरूपण किया जाता है एक समय इतिहास केवल राजाओं की युद्ध की घटनाओं का वर्णन करने वाला विषय मात्र माना जाता था परन्तु अब इतिहास के अध्ययन का ध्येय सभी प्रकार के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तनों का अध्ययन जाना जाता था।

जार्ज ई० हेवार्ड → "इतिहास भूतकालीन समाजशास्त्र है जबकि समाजशास्त्र वर्तमान इतिहास है।"

UNIT III rd

मूल अवधारणाएँ → समाज, समुदाय, संस्थाएँ, समिति, सामाजिक समूह, मानव एवं पशु समाज

समाज का अर्थ → समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग सामाजिक सम्बन्धों के ताने बाने के लिए किया जाता है। समाज एक मूर्त संगठन नहीं है अपितु मात्र सामाजिक सम्बन्धों की एक अमूर्त व्यवस्था है।

मैकाइवर के अनुसार → "समाज मनुष्यों के समूह का नाम नहीं है, वरन यह समूह अन्तःसम्बन्धों की जटिल व्यवस्था है।"

एडम स्मिथ के अनुसार — "समाज पारस्परिक मितव्ययता की कृत्रिम विधि है।"

विशेषता

1. अमूर्त संकल्पना
2. समाज व्यक्तियों का समूह मात्र नहीं है।
3. समाज में समानता
4. समाज में असमानता
5. पारस्परिक जागरूकता
6. सहयोग संघर्ष
7. पारस्परिक निर्भरता
8. समाज और जीवन
9. निरन्तर परिवर्तनशीलता

समुदाय का अर्थ → समुदाय शब्द को अंग्रेजी में Community कहते हैं। Community दो शब्दों से मिलकर बना है Com और Munis। Com का अर्थ है एक साथ तथा Munis का अर्थ सेवा करना। कम्युनिटी शब्द का शाब्दिक अर्थ — एक साथ सेवा करना। ऐसे व्यक्तियों का समूह, जिनमें परस्पर मिलकर रहने की भावना रहती है तथा जो परस्पर सहयोग द्वारा अपने अधिकारों का उपभोग करते हैं।

डेविस के अनुसार — "समुदाय एक सबसे छोटा क्षेत्रीय समूह है जिसके अन्तर्गत सामाजिक जीवन के समस्त पहलुओं का समावेश हो सकता है।"

MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

ग्रीन के अनुसार → "समुदाय संकीर्ण प्रादेशिक घेरों में रहने वाले उन व्यक्तियों का समूह है जो जीवन के सामान्य ढंग को अपनाते हैं एक समुदाय एक स्थानीय क्षेत्रीय समूह है।"

विशेषता या तत्व

1. स्थानीयता
2. निश्चित भू-भाग
3. सामुदायिक भावना
4. जनसमूह
5. सामान्य जीवन
6. स्वतः जन्म
7. विशेष नाम
8. स्थायित्व
9. आत्मनिर्भरता
10. अनिवार्य सदस्यता
11. समानताओं का क्षेत्र

संस्था का अर्थ → संस्था शब्द का प्रयोग ऐसे संगठन के लिए किया जाता है, जो मूर्त है। अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, अनाथालय। संस्थाएँ, नियमों, जनरीतियों, रूढ़ियों व कार्यप्रणालियों का समूह है जो कुछ मानवीय हितों या उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु केन्द्रित हो जाता है।

रॉस के अनुसार → "सामाजिक संस्थाएं सामान्य इच्छा से स्थापित या अभिमत संगठित मानव सम्बन्धों के समूह होते हैं।"

समनर के अनुसार – "संस्था के अन्तर्गत अवधारणा (विचार मत स्वार्थ) और संरचना सम्मिलित होती है"

विशेषता

1. अमूर्त धारणा
2. निश्चित उद्देश्य

③ स्थायित्व
④ संरचना
⑤ सामूहिक स्वीकृति
⑥ प्रतीक
⑦ चिन्ह
⑧ सामाजिक विरासत
⑨ सांस्कृतिक उपकरण

समिति का अर्थ → समिति एक ऐसा संगठन है जिसके माध्यम से कुछ व्यक्ति मिलकर सामान्य हितों की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार – "सामान्य रूप से किसी एक हित या कुछ हितों की प्राप्ति के लिए निर्मित संगठन को समिति कहते हैं।"

बोगार्डस के अनुसार – "प्राय: किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मिलकर कार्य करने को समिति कहते हैं।"

विशेषता

① मूर्त प्रकृति
② सहयोग की भावना
③ निश्चित उद्देश्य
④ निश्चित नियम
⑤ ऐच्छिक सदस्यता
⑥ अस्थायी स्वभाव
⑦ विचारपूर्वक स्थापना
⑧ एक साधनमात्र

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

सामाजिक समूह का अर्थ → समूह का शाब्दिक अर्थ है वस्तुओं का संकलन। जो परस्पर एक दूसरे के अत्यन्त निकट हैं या सम्बन्धित हैं। जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी लक्ष्य या उद्देश्य को पाने के लिए एक दूसरे को प्रभावित करते हैं या अन्तक्रिया करते हैं। और इसके परिणामस्वरूप उनके मध्य सामाजिक सम्बन्ध विकसित होते हैं। तो उन व्यक्तियों के संग्रह को सामाजिक समूह कहा जाता है।

ग्यूबर के अनुसार → "समूह अनिश्चित संख्या के मनुष्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को कहते हैं।"

हार्टन एण्ड हण्ट के अनुसार — "समूह व्यक्तियों के संग्रह अथवा श्रेणियाँ होते हैं जिनमें सदस्यता एवं अन्तक्रिया की चेतना है।"

विशेषता

① व्यक्तियों का संग्रह
② सदस्यों में परस्पर सम्बन्ध
③ सदस्यों में एकता की भावना
④ सदस्यों के व्यवहार में समानता
⑤ संगठन
⑥ सदस्यों में सहयोग
⑦ अनुशासन
⑧ नियन्त्रण
⑨ मूर्त संगठन

सामाजिक समूहों का वर्गीकरण

① संख्या या आकार के आधार पर
② इच्छा या अनिवार्यता के आधार पर
③ स्थान के आधार पर

④ सादृश्यता के आधार पर
⑤ हितों के आधार पर
⑥ आत्मीयता के आधार पर
⑦ सम्बन्धों के आधार पर

समनर द्वारा वर्गीकरण

अन्त: समूह
इस समूह के सदस्यों में अपनापन पाया जाता है। इसके सदस्य समूह के दुखों को अपना दुख तथा सुख को अपना सुख मानते हैं।

बाह्य समूह
इनमें दूसरों का समूह होने के कारण सहयोग, स्नेह, सहानुभूति, इत्यादि का अभाव पाया जाता है, व्यक्ति इन समूहों को पराया मानते हैं।

कूले द्वारा वर्गीकरण

प्राथमिक समूह
इन समूहों के सदस्यों में आमने सामने के सम्बन्ध व सहयोग पाया जाता है। परिवार, क्रीड़ा समूह

द्वितीयक समूह
ये आकार में बड़े होते हैं इनमें सहयोग व घनिष्ठता का अभाव पाया जाता है। राष्ट्र, राजनीतिक दल, श्रमिक संघ

MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

मैकाइवर तथा पेजद्वारा वर्गीकरण

- क्षेत्रीय समूह
- असंगठित परन्तु हितों के प्रति चेतन समूह
- संगठित परन्तु हितों के प्रति चेतन समूह

मिलर द्वारा वर्गीकरण

- साम्यवत् समूह
- समान्तर समूह

मानव समाज → समाजशास्त्र एक ऐसा सामाजिक विज्ञान है जिसके अन्तर्गत मानव समाज का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है मानव समाज में रहते हैं। इसलिए मानव को एक सामाजिक प्राणी माना जाता है।

विशेषता

1. शारीरिक व मानसिक समानता
2. भाषा
3. संकेत
4. विकसित क्षमताएँ
5. पारस्परिक सहयोग
6. समितियाँ एवं संगठनों की व्यवस्था
7. राजनीतिक संगठन

(8) सांस्कृतिक तत्वों की मान्यता
(9) धर्म
(10) नैतिकता
(11) आर्थिक संगठन
(12) समानता तथा विभिन्नता
(13) सहयोग
(14) संघर्ष
(15) अनुभव द्वारा ज्ञान
(16) यातायात एवं संचार के साधन
(17) जीवन के उच्च आदर्श
(18) सभ्यता और संस्कृति

मानव तथा पशु समाज में अन्तर

(1) जैविक और सांस्कृतिक अन्तर
(2) भाषा सम्बन्धी अन्तर
(3) परिवर्तनशीलता सम्बन्धी अन्तर
(4) ज्ञानार्जन में अन्तर
(5) विरासत में अन्तर
(6) नैतिक नियमों के विधान में अन्तर
(7) श्रम विभाजन में अन्तर
(8) सामाजिक जागरूकता का अन्तर
(9) यौन सम्बन्धों में अन्तर
(10) विशिष्टीकरण में अन्तर

BULANDSHAHR ... MANAGEMENT & TECHNOLOGY

(11) नियन्त्रण सम्बन्धी अन्तर

ग्रामीण समुदाय और नगरीय समुदाय में अन्तर

① सामाजिक नियन्त्रण में अन्तर

② सम्बन्धों की प्रकृति में अन्तर

संस्थाओं के कार्य

① कार्यों का सरलीकरण

② व्यवहार पर नियन्त्रण

UNIT-IV

सामाजिक संस्थाएँ परिवार नातेदारी, विवाह, शिक्षा राज्य एवं धर्म

परिवार का अर्थ → परिवार समाज की वह केन्द्रीय इकाई है जिसमें माता पिता, भाई बहन, चाचा-चाची, भतीजा, भतीजी पुत्र पुत्रीआदि होते हैं और जो पारस्परिक स्नेह तथा उत्तरदायित्व की भावना से परिपूर्ण होते हैं।

किंग्सले डेविस के अनुसार – "परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिनमें सगोत्रता के सम्बन्ध होते हैं और जो उस प्रकार एक दूसरे के सम्बन्धी होते हैं।"

विशेषता

① पति पत्नी का सम्बन्ध
② यौनसम्बन्ध
③ रक्त सम्बन्ध
④ निवास स्थान
⑤ आर्थिक सुरक्षा
⑥ सामाजिक सुरक्षा
⑦ सभ्यता का ज्ञान
⑧ संस्कृति का ज्ञान
⑨ सार्वभौमिकता
⑩ भावात्मक आधार
⑪ सीमित आकार
⑫ स्थायी और अस्थायी प्रकृति
⑬ प्रत्यक्ष सम्बन्ध

BULANDSHAHR TECHNOLOGY & MANAGEMENT

परिवार के प्रकार

सत्ता, वंश तथा निवास स्थान के आधार पर वर्गीकरण

- पितृमूलक परिवार
- मातृमूलक परिवार

विवाह प्रणाली के आधार पर वर्गीकरण

- एकविवाही परिवार
- बहुपत्नी परिवार
- बहुपति परिवार

संगठन के आधार पर वर्गीकरण

- एकाकी परिवार
- संयुक्त परिवार

परिवार के कार्य या महत्व

(1) प्राणिशास्त्रीय कार्य

(1) यौनइच्छा की पूर्ति
(2) सन्तानोत्पत्ति
(3) सन्तान का लालन पालन
(4) भोजन की व्यवस्था
(5) जीवन की सुरक्षा
(6) वस्त्रों की व्यवस्था
(7) निवास की व्यवस्था

(2) सामाजिक कार्य →

(1) बालक का सामाजीकरण
(2) सामाजिक विरासत का हस्तान्तरण व प्रसार करना
(3) सदस्यों को सामाजिक स्थिति प्रदान करना
(4) सदस्यों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना
(5) जीवन साथी के चुनाव में सहायक
(6) सामाजिक नियन्त्रण में सहायक

BULANDSHAHR MANAGEMENT TECHNOLOGY

(3) आर्थिक कार्य →

(1) श्रमविभाजन
(2) व्यावसायिक प्रशिक्षण
(3) उत्पादन की प्रेरणा
(4) आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र
(5) उत्तराधिकार का निश्चय

(4) राजनीतिक कार्य

(1) .

⑤ नागरिकता का प्रशिक्षण स्थल

① स्नेह की शिक्षा

② सहानुभूति की शिक्षा

③ सहयोग की शिक्षा

④ निःस्वार्थता की शिक्षा

⑤ आज्ञापालन और कर्तव्यपालन की शिक्षा

⑥ मनोरंजनात्मक कार्य

⑦ शैक्षिक कार्य

⑧ सांस्कृतिक कार्य

⑨ धार्मिक कार्य

⑩ मनोवैज्ञानिक कार्य

नातेदारी का अर्थ → नातेदारी का अर्थ रिश्तेदारों अथवा नातेदारों से है। नातेदारी में सभी वास्तविक अथवा कल्पित समरक्तता वाले व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है।

रैडक्लिफ ब्राउन के अनुसार - "नातेदारी सामाजिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत वंश सम्बन्ध है जो कि सामाजिक सम्बन्धों के परम्परागत सम्बन्धों का आधार है।"

भेद

- रक्त सम्बन्धी नातेदारी
- विवाह सम्बन्धी नातेदारी

श्रेणियाँ

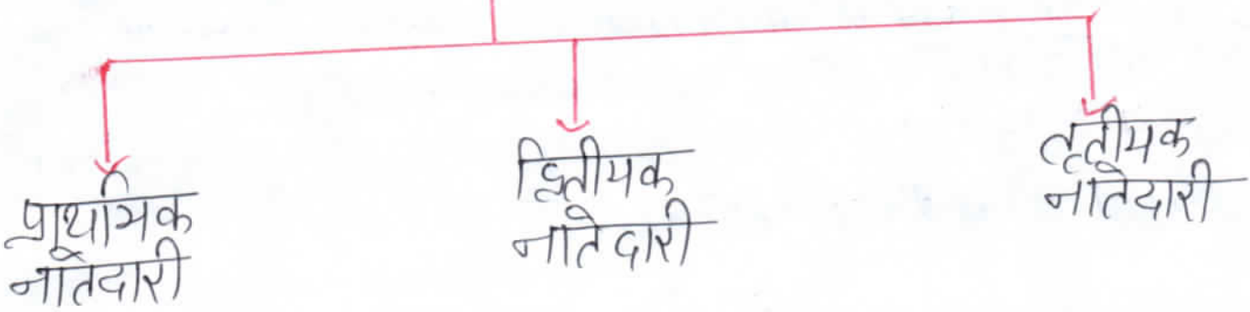

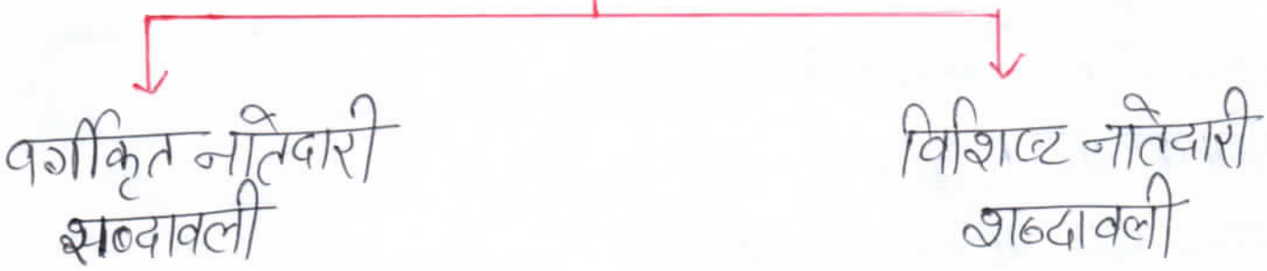

- प्राथमिक नातेदारी
- द्वितीयक नातेदारी
- तृतीयक नातेदारी

शब्दावली

- वर्गीकृत नातेदारी शब्दावली
- विशिष्ट नातेदारी शब्दावली

रीतियाँ

1. परिहार सम्बन्ध
2. परिहास सम्बन्ध
3. माध्यमिक सम्बोधन
4. मातुलेय
5. पितृश्वस्रेय
6. सहकष्टी

MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

विवाह का अर्थ → विवाह एक सामाजिक संस्था है जिसके अन्तर्गत स्त्री पुरुष समाज द्वारा मान्यता प्राप्त ढंग से आपस में पति पत्नी के रूप में यौन सम्बन्ध स्थापित करके बच्चों को जन्म देते हैं तथा उनका समुचित पालन पोषण करते हैं।

बोगार्डस के अनुसार — "विवाह स्त्रियां और पुरुषों को पारिवारिक जीवन में प्रवेश कराने वाली संस्था है।"

उद्देश्य

① यौन सुख की सन्तुष्टि
② सन्तानोत्पत्ति एवं बच्चों को सामाजिक स्थिति प्रदान करना
③ आर्थिक तथा सामाजिक उद्देश्य
④ परिवार का निर्माण करना
⑤ मनोवैज्ञानिक उद्देश्य
⑥ सम्बन्धों में स्थायित्व

विवाह के प्रमुख स्वरूप या प्रकार

① जीवनसाथी की संख्या का आधार

① एकविवाह →
② बहुविवाह → (1) बहुपत्नी विवाह
(2) बहुपति विवाह
③ समूह विवाह

② यौन सम्बन्धी सीमाओं के आधार

① अन्तर्विवाह

② बहिर्विवाह

③ अन्तर्जातीय विवाह

शिक्षा का अर्थ — शिक्षा बालक या व्यक्ति का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा है। शिक्षा का अर्थ मैं बालक अथवा मनुष्य में आत्मा, शरीर और बुद्धि के सर्वांगीण और सबसे अच्छे विकास से समझता हूँ।

फ्रोबेल → "शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियाँ बाहर प्रकट होती हैं।"

काण्ट → "शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसकी उसमें क्षमता है।"

विशेषता

① निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया

② सचेतन प्रक्रिया

③ शिक्षण संस्थाओं तक सीमित नही

④ विकास की प्रक्रिया

⑤ आजीवन चलने वाली प्रक्रिया

⑥ गत्यात्मक प्रक्रिया

⑦ परिवर्तनकारी प्रक्रिया

⑧ द्विमुखी प्रक्रिया

⑨ त्रिमुखी प्रक्रिया

शिक्षा के सामाजिक कार्य

① राष्ट्रीय विकास में योगदान

② राष्ट्रीय एकता के विकास में योगदान

③ भावात्मक एकता में वृद्धि
④ सार्वजनिक हित के लिए व्यक्तिगत हित के बलिदान का भाव विकसित करना
⑤ योग्य कार्यकर्ता तैयार करना
⑥ सामाजिक विकास का कार्य
⑦ सभ्यता तथा संस्कृति के संरक्षण का कार्य

सामाजिक नियन्त्रण में शिक्षा की भूमिका

① व्यक्तित्व का विकास
② सामाजिक व्यवहार का नियमन
③ अनुकूलन
④ आर्थिक सुरक्षा
⑤ भौतिक, बौद्धिक व नैतिक विकास
⑥ संस्कृति का हस्तान्तरण
⑦ तनावों पर नियन्त्रण

राज्य का अर्थ → राज्य मनुष्यों द्वारा निर्मित एक राजनीतिक संगठन है इस राजनीतिक संगठन का एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है राज्य का काम चलाने के लिए शासनतन्त्र या सरकार होती है और राज्य का संस्थात्मक पहलू है राज्य की अपनी प्रभुसत्ता होती है।

अरस्तू के अनुसार — "राज्य परिवारों और गाँवों का एक ऐसा समुदाय है जिसका उद्देश्य पूर्ण और आत्मनिर्भर जीवन की प्राप्ति है।"

गार्नर के अनुसार — "राजनीति विज्ञान के अध्ययन का आरम्भ और अन्त राज्य के साथ होता है।"

तत्व

① जनसंख्या
② स्थायी भू-भाग
③ सरकार
④ सम्प्रभुता

कार्य

① शान्ति तथा व्यवस्था बनाए रखना
② समुचित न्यायिक व्यवस्था को सुनिश्चित करना
③ सांस्कृतिक कार्य
④ लोक कल्याणकारी कार्यों का सम्पादन
⑤ आर्थिक गतिविधियों का संचालन

कारक

① रक्त सम्बन्ध या नातेदारी
② धर्म
③ शिक्षा
④ राजनीतिक चेतना
⑤ सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताएँ
⑥ मूल सामाजिक प्रवृत्ति

BULANDSHAHR TECHNOLOGY MANAGEMENT

सामाजिक नियन्त्रण में राज्य की भूमिका

① पारिवारिक जीवन पर नियन्त्रण
② आर्थिक व्यवस्था पर नियन्त्रण
③ सामाजिक क्रियाओं पर नियन्त्रण
④ बाह्य आक्रमण से देश की रक्षा

(5) आन्तरिक सुव्यवस्था और शान्ति बनाए रखना

(6) मौलिक अधिकारों की रक्षा

(7) कानून द्वारा नियन्त्रण

(8) अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का नियमन

धर्म का अर्थ → धर्म को अंग्रेजी में Religion कहते हैं जो कि लैटिन भाषा के Rel(I)igio नामक शब्द से बना है बाँधना। धर्म का अभिप्राय उन संस्कारों के प्रतिपादन से है जो मनुष्य और ईश्वर या अलौकिक शक्ति को एक दूसरे से बाँधते या जोड़ते हैं।

टॉयलर के अनुसार – "आध्यात्मिक सत्ताओं में विश्वास ही धर्म है ये सत्ताएँ दैविक तथा राक्षसी दोनों ही प्रकार की हो सकती हैं।"

तत्व

(1) पवित्र विश्वास
(2) संवेगात्मक भावनाएँ
(3) धर्माचरण
(4) धर्म के प्रतीक

कार्य

(1) सामाजिक नियन्त्रण में सहायक
(2) नैतिकता का आधार
(3) संस्कृति का अंग
(4) मानसिक तनाव को कम करना
(5) सामाजिक एकता में वृद्धि करना
(6) परिवार की एकता को सुदृढ़ बनाना

⑦ कलात्मक विकास में योगदान देना
⑧ कल्याणकारी भावनाओं को प्रोत्साहित करना
⑨ अध्यात्मवाद को प्रोत्साहित करना
⑩ देशभक्ति की भावना का विकास

सामाजिक नियन्त्रण में धर्म की भूमिका

① व्यक्ति के आचार एंव व्यवहार पर नियन्त्रण रखना
② समाज में व्यवस्था बनाए रखना
③ जीवन को पवित्रता प्रदान करना
④ परम्परागत जीवन का समर्थन करना
⑤ सद्गुणों को विकसित करना

BULANDSHAHR

UNIT-V

संस्कृति और सभ्यता

① सीधे खड़े होने की क्षमता
② विभिन्न दिशाओं में तथा घुमाने की क्षमता
③ तीक्ष्ण व स्थान विशेष पर केन्द्रित की जा सकने वाली दृष्टि
④ मेधावी मस्तिष्क
⑤ विचारों का आदान-प्रदान

संस्कृति का अर्थ → संस्कृति शब्द संस्कार का रूपान्तरण है जीवन में जन्म से मृत्यु तक अनेक संस्कार होते हैं जिनके आधार पर एक व्यक्ति अपने जीवन को संस्कृत या परिमार्जित करता है इस प्रकार जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति शुद्धि के लिए जिन आवश्यक संस्कारों को अपनाता है उसे संस्कृति कहते हैं।

विशेषता

① प्रत्येक समाज की एक विशिष्ट संस्कृति होती है
② हस्तान्तरित या संचरित योग्यता
③ सन्तुलन तथा संगठन का गुण
④ आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक
⑤ सीखी गई योग्यता
⑥ संस्कृति मानव निर्मित है
⑦ संस्कृति समूह के लिए आदर्श होती है
⑧ सामाजिक गुण
⑨ संस्कृति अधिवैयक्तिक और अधिसावयव है।

BULANDSHAHR

संस्कृति के विभिन्न अंग

① सांस्कृतिक तत्व
② संस्कृति संकुल

③ संस्कृति प्रतिमान

④ संस्कृति क्षेत्र

संस्कृति के विभिन्न तत्व या प्रकार

भौतिक संस्कृति

इसके अन्तर्गत मानवीय आवश्यकता पूर्ति के लिए मानव निर्मित उन सभी वस्तुओं को सम्मिलित किया जाता है। जिन्हें हम देख व छू सकते हैं।

अभौतिक संस्कृति

इसके अन्तर्गत अभौतिक पक्ष सम्मिलित हैं जैसे-धर्म कला, साहित्य, परम्परा, ज्ञान आदि। इसे माप नहीं सकते।

सभ्यता का अर्थ — सभ्यता से हमारा तात्पर्य उस सम्पूर्ण प्रविधि तथा संगठन से है जिसे मनुष्य ने अपने जीवन की दशाओं को नियंत्रित करने के प्रयत्न से बनाया है।

संस्कृति और सभ्यता में सम्बन्ध

① सभ्यता संस्कृति का पर्यावरण है।

② सभ्यता में संस्कृति की भूमिका

③ सभ्यता संस्कृति की वाहक है

④ संस्कृति के प्रसार में सहायक

संस्कृति और सभ्यता में अन्तर

① सभ्यता का व्यापक क्षेत्र लेकिन संस्कृति का सीमित क्षेत्र

② सभ्यता निरन्तर आगे बढ़ती है लेकिन संस्कृति नहीं

③ संस्कृति प्राथमिक हित से सम्बन्धित है लेकिन सभ्यता द्वितीय हित से

④ संस्कृति साध्य है जबकि सभ्यता साधन

(5) सभ्यता का मापन सरल है लेकिन संस्कृति का नहीं
(6) सभ्यता समाज को उन्नति की ओर ले जाती है जबकि संस्कृति में अनिश्चितता होती है।

सांस्कृतिक तत्वों का योग ही संस्कृति संकुल है।

बहुलवाद का अर्थ → बहुलवाद से आशय उस समाज, सरकार की व्यवस्था अथवा संगठन से है जो विभिन्न समूहों को किसी एक अधिक प्रबल समूह के साथ रहकर अपनी पहचान बनाए रखने की स्वीकृति प्रदान करता है।

बहुलवाद की उत्पत्ति में सहायक तत्व

(1) स्वशासित समुदायों की भूमिका
(2) आदेशवादियों की भूमिका
(3) लोकतान्त्रिक विचारों की भूमिका
(4) नवीन विचारधाराओं की भूमिका
(5) सम्प्रभुता के विचारों की भूमिका

सांस्कृतिक सापेक्षता

(1) नैतिक दृष्टिकोण
(2) संस्कृति का स्वतन्त्र इतिहास
(3) प्रतिमानों का समुच्चय
(4) समाज का संस्कार
(5) संस्कृतियों का एक दूसरे पर प्रभाव
(6) समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा संस्कृति का अर्जन

BULANDSHAHR

UNIT-VI

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ

सामाजिक प्रक्रियाएँ → व्यक्ति और समूह अपनी समस्याओं के समाधान तथा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक-दूसरे पर जो पारस्परिक प्रभाव डालते हैं उन्हीं पारस्परिक प्रभावों को सामाजिक अन्तक्रिया कहते हैं।

विशेषता

1. सामाजिक सम्बन्ध
2. सूचनाओं का आदान-प्रदान
3. घटनाओं का बार-बार घटित होना
4. घटनाओं में परस्पर जुड़ाव
5. विविधता का गुण
6. निरन्तरता
7. परिवर्तनशीलता
8. विशेष परिणाम

BULANDSHAHR

सहयोग – किसी समान लक्ष्य के लिए दो या अधिक व्यक्तियों या समूहों का परस्पर मिलकर कार्य करना ही सहयोग है।

सहयोग के विभिन्न स्वरूप

प्रोफेसर ग्रीन द्वारा प्रस्तुत स्वरूप

- प्राथमिक सहयोग
- द्वितीयक सहयोग
- तृतीयक सहयोग

मैकाइवर व पेज द्वारा प्रस्तुत स्वरूप

- प्रत्यक्ष सहयोग
- अप्रत्यक्ष सहयोग

ऑगबर्न और निमकॉफ द्वारा प्रस्तुत स्वरूप

- सामान्य सहयोग
- मित्तवत् सहयोग
- सहायतामूलक सहयोग

संघर्ष → संघर्ष एक ऐसा प्रयत्न है जिसमें किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों की इच्छाओं का जान-बूझकर विरोध किया जाता है उन्हें दबाया जाता है अथवा उपेक्षित किया जाता है।

संघर्ष के विभिन्न स्वरूप

मैकाइवर और पेज के अनुसार संघर्ष के स्वरूप

- प्रत्यक्ष संघर्ष
- अप्रत्यक्ष संघर्ष

किंग्सले डेविस के अनुसार

- आंशिक संघर्ष
- पूर्ण संघर्ष

गिलिन तथा गिलिन के अनुसार

- वैयक्तिक संघर्ष
- प्रजातीय संघर्ष
- वर्ग संघर्ष
- राजनीति संघर्ष

संघर्ष के विभिन्न कारण

1. व्यक्तिगत विभिन्नता
2. परस्पर विरोधी स्वार्थ
3. समाज में परिवर्तन की स्थिति
4. सांस्कृतिक भिन्नता
5. सीमित मात्रा में साधनों की उपलब्धता
6. समाज का जातीय संस्तरण

BULANDSHAHR

व्यवस्थापन या समायोजन Arrangement or Adjustment

प्रतिस्पर्धा अथवा संघर्ष को कम करने या टालने या उसके बाद सहयोग करने की प्रक्रिया को व्यवस्थापन या समायोजन कहते हैं। यह एक अस्थायी प्रक्रिया है

इस अर्थ में व्यवस्थापन को समझौता कहा जा सकता है।

समायोजन या व्यवस्थापन के प्रकार

- समन्वयात्मक व्यवस्थापन
- अधीनस्थ व्यवस्थापन

प्रतिकूलता

किसी व्यक्ति को पृथक्करण का आभास दिलाने वाली मानसिक स्थिति है इसमें व्यक्ति बाहरी रूप से तो शान्त रहता है, परन्तु आन्तरिक रूप में तनाव में आ जाता है। यह एक व्यक्तिगत एवं मानसिक स्थिति है।

प्रकार

- पारिवारिक प्रतिकूलता
- लैंगिक प्रतिकूलता
- सांस्कृतिक प्रतिकूलता
- संसदीय प्रतिकूलता

प्रतियोगिता का अर्थ → जब कभी भी दो या दो से अधिक व्यक्ति या समूह आपस में इस प्रकार की अहिंसात्मक क्रियाएँ करते हैं कि दूसरे के हित को दबाकर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की जाए, तब ऐसे प्रयत्न को प्रतियोगिता कहते हैं।

विशेषता

(1) अवैयक्तिक प्रयत्न
(2) अप्रत्यक्ष संघर्ष

② निरन्तरता एंव सार्वभौमिकता
④ अचेतन प्रक्रिया

प्रतियोगिता के विभिन्न प्रकार

① प्रजातीय प्रतियोगिता
② सांस्कृतिक प्रतियोगिता
③ प्रस्थिति एंव भूमिका से सम्बन्धित प्रतियोगिता
④ आर्थिक प्रतियोगिता

प्रतियोगिता के परिणाम

① सामाजिक सन्तुलन में सहायक
② सामाजिक जागरूकता में वृद्धि
③ सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि
④ सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन
⑤ समायोजन में सहायक
⑥ व्यक्तिगत कार्यकुशलता में वृद्धि
① सहयोगात्मक परिणाम
② असहयोगात्मक परिणाम

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

सात्मीकरण का अर्थ → सात्मीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी समय असमान व्यक्ति या समूह अपने स्वार्थ एंव दृष्टिकोणों में समान हो जाते हैं।

सात्मीकरण में सहायक कारक

① आर्थिक-सांस्कृतिक समानता

② उन्नत संचार व यातायात के साधन

③ समान समस्याएँ

④ सहिष्णुता

⑤ निकटता

⑥ सामाजिक सम्पर्क

⑦ संस्कृतिकरण

⑧ प्रजातीय मिश्रण

⑨ उदार नेतृत्व

UNIT-VII

सामाजिक संरचना

सामाजिक संरचना का अर्थ → किसी वस्तु या समाज के विभिन्न अंगों के बीच पायी जाने वाली सुव्यवस्था का बोध होता है। सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित जाल, जिससे समाज का निर्माण होता है। सामाजिक संरचना का मूल आधार है।

रैडक्लिफ ब्राउन के अनुसार → "संरचना की परिभाषा इकाइयों के पारस्परिक सम्बन्धों के पुंज के रूप में की जा सकती है।"

विशेषताएँ

1. अमूर्त अवधारणा
2. समाज के बाह्य ढाँचे का बोध
3. स्थिर धारणा
4. प्रत्येक समाज की संरचना में भिन्नता
5. सामाजिक व्यवस्था का आधार स्तम्भ
6. अनेक उपसंरचनाएँ
7. विभिन्न अंगों का योग

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

रैडक्लिफ ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना की विशेषताएँ

1. व्यक्तियों द्वारा निर्मित
2. क्रमबद्धता
3. मूर्त वास्तविकता
4. गतिशील निरन्तरता
5. परिवर्तनशीलता

③ संस्थाओं द्वारा स्थायित्व

① स्थानीय पक्ष

② समय सापेक्ष अवधारणा

रैडक्लिफ ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना के तीन प्रमुख विभाग या खण्ड

① सामाजिक रचनाशास्त्र

② सामाजिक शरीरशास्त्र

③ सामाजिक विकास की प्रक्रियाएँ

सामाजिक संरचना की प्रमुख समस्याएँ

① प्रतिमान स्थायित्व और तनाव प्रबन्ध

② अनुकूलन

③ लक्ष्य प्राप्ति

④ एकीकरण

स्थिति का अर्थ → समाज में व्यक्ति का उसके समूह में जो स्थान होता है उसे व्यक्ति की स्थिति कहते हैं।

लेपियर के अनुसार - "सामाजिक स्थिति साधारणतः व्यक्ति की समाज में स्थिति से समझी जाती है।"

सामाजिक स्थिति के स्वरूप

① अधिरोपित स्थिति

② उपार्जित स्थिति

③ कल्पित स्थिति →

① सामान्य स्थिति

② विशिष्ट स्थिति

कार्य अथवा भूमिका का अर्थ → व्यक्ति से उसकी स्थिति के अनुसार जिस कार्य की आशा की जाती है वही भूमिका है।

कार्य व स्थिति का सम्बन्ध

1. अन्योन्याश्रितता
2. स्थिति कार्यों की प्रेरक
3. स्थिति द्वारा कार्यों का निर्धारण
4. कार्यों द्वारा स्थिति का निर्धारण
5. कार्यों द्वारा श्रेणी का निर्धारण

सामाजिक प्रतिमान का अर्थ → सामाजिक प्रतिमान व्यवहार के वे नियम हैं जो समाज द्वारा स्वीकृति के कारण संस्थागत हो जाते हैं तथा स्वीकृत व्यवहार के नियम प्रतिमान कहलाते हैं।

विशेषता

1. स्थायी प्रकृति
2. सामाजिक अनुमोदन
3. संस्कृति के प्रतिनिधि
4. कल्याणकारी प्रकृति
5. लिखित व अलिखित स्वरूप
6. कर्तव्य की भावना
7. रूढ़िवादी प्रकृति
8. दोहरी प्रकृति

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY
BULANDSHAHR

प्रकार

समनर के अनुसार →
1. जनरीतियाँ
2. रूढ़ियाँ
3. कानून

जनरीति का अर्थ → जन + रीति। जन का अर्थ जनता रीति का अर्थ - किसी कार्य को करने का तरीका अथवा ढंग। जनरीति का अर्थ हुआ - जनता में विभिन्न कार्य करने के तरीके जनरीति को लोकरीति भी कहते हैं।

जनरूढ़ि का अर्थ → जनरूढ़ि वह जनरीति है जिसके साथ लोक कल्याण की भावना जुड़ी हुई है इन्हें हम सामूहिक कल्याण की भावना से ओत प्रोत कार्य करने की समाज द्वारा स्वीकृत स्वीकृत विधियाँ भी कह सकते हैं।

प्रकार

- आदेशात्मक या सकारात्मक जनरूढ़ियाँ
- निषेधात्मक अथवा नकारात्मक जनरूढ़ियाँ

प्रतिबन्ध के प्रकार

① निरोधात्मक प्रतिबन्ध

② विचलन पर रोक लगाने वाले प्रतिबन्ध
- (1) शारीरिक प्रतिबन्ध
- (2) मनोवैज्ञानिक प्रतिबन्ध
- (3) आर्थिक प्रतिबन्ध
- (4) सामाजिक प्रतिबन्ध

सामाजिक मूल्य का अर्थ → जब किसी समाज के स्त्री पुरुष अपने ही तरह के लोगों के साथ मिलते हैं काम करते हैं या नात करते हैं तब मूल्य

ही उनके क्रमबद्ध सामाजिक संसर्ग को संभव बनाते हैं।

प्रकार

① डलियट तथा मैरिल → ① देशभक्ति
② मानवीय स्नेह
③ आर्थिक सफलता

② सी० एम० केस → ① जैविकया सावयवी मूल्य
② सांस्कृतिक मूल्य
③ सामाजिक मूल्य
④ विशिष्ट मूल्य

प्रदत्त तथा अर्जित स्थिति में अन्तर –

① प्रदत्त स्थिति समाज की परम्पराओं द्वारा प्राप्त होती है जबकि अर्जित स्थिति व्यक्ति के प्रयास द्वारा प्राप्त होती है।

② प्रदत्त स्थिति व्यक्ति को स्वतः प्राप्त हो जाती है किन्तु अर्जित स्थिति के लिए व्यक्ति को प्रयास करना पड़ता है।

③ प्रदत्त स्थिति आयु, लिंग या जाति के आधार पर निर्धारित होती है जबकि अर्जित स्थिति का आधार शिक्षा व सम्पत्ति है।

④ प्रदत्त स्थिति परम्पराओं पर आधारित होने के कारण अनिश्चित होती है परन्तु अर्जित स्थिति पूर्णरूप से निश्चित होती है।

⑤ प्रदत्त स्थिति के बदलने पर व्यक्ति के सामाजिक जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि अर्जित स्थिति के गिरने से

BULANDSHAHR

व्यक्ति का समाज में अपमान हो सकता है।

UNIT - VIII

सामाजिक स्तरीकरण एवं सामाजिक गतिशीलता

सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ → स्तरीकरण उस प्रक्रिया को कहते हैं, जिसमें व्यक्ति या समूह एक स्थिर स्थिति की क्रमबद्धता में बाँटे जाते हैं। सामाजिक स्तरीकरण या विभाजन में जाति, वर्ग, वर्ण आदि को सम्मिलित किया जाता है।

विशेषता

1. पद सोपानक्रम
2. निश्चित स्थिति व क्रम
3. वर्गीय योग्यता परीक्षण
4. कार्य की प्रधानता
5. वर्गीय अन्तः निर्भरता
6. सामाजिक मूल्यों की पृथकता
7. सार्वभौमिक प्रक्रिया

सामाजिक स्तरीकरण के आधार

G.R. INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

1. आयु
2. लिंग
3. जन्म
4. धन
5. बौद्धिक योग्यता तथा कार्यक्षमता
6. जाति तथा वर्ग
7. राजनीति सत्ता

सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप

1. जातीय संस्तरण → 1. योग्यता व धन का महत्व

② जन्म का महत्व
③ ऊँच नीच की भावना
④ स्थायित्व

② वर्गगत स्तरीकरण → ① धन की महत्व
② शिक्षा का महत्व
③ सामाजिक मूल्यों की भिन्नता

③ दास प्रथा पर आधारित स्तरीकरण

④ सम्पदाओं पर आधारित स्तरीकरण

महत्व

① श्रम विभाजन
② संगठित समाज
③ स्थिति व कार्यों की निश्चितता
④ व्यक्तियों में सन्तोष
⑤ पारस्परिक निर्भरता
⑥ सामाजिक प्रगति

सामाजिक विभेदीकरण का अर्थ → सामाजिक विभेदीकरण का तात्पर्य सामाजिक विभेदों से हैं भिन्नता उत्पन्न करने वाली सामाजिक प्रक्रिया को ही विभेदीकरण के नाम से भी जाना जाता है।

विशेषता

① सार्वभौमिक प्रक्रिया
② सतत प्रक्रिया
③ सचेत प्रक्रिया
④ अवैयक्तिक प्रक्रिया

कारण

① प्राकृतिक भिन्नताएँ ③ प्राणिशास्त्रीय भिन्नताएँ ⑤ श्रम विभाजन
② सामाजिक परिवर्तन ④ कार्यों में भिन्नता

महत्व

① सामाजिक संगठन बनाए रखने में सहायक
② आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक
③ सामाजिक सुरक्षा
④ श्रम विभाजन
⑤ पद निर्धारण
⑥ कार्य कुशलता में वृद्धि
⑦ सामाजिक प्रगति

सामाजिक वर्ग का अर्थ → सामाजिक व्यक्तियों का एक ऐसा योग है जिसका विशेष स्थान अथवा पद प्रदान किया जाता है।

विशेषता

① विभिन्न आधार
② ऊँच नीच की भावना
③ वर्ग चेतना
④ मुक्त संगठन
⑤ परिवर्तनशीलता
⑥ अन्तर्वर्गीय विवाह
⑦ वर्गीय संगठन की भावना
⑧ विशिष्ट संस्कृति
⑨ उपवर्गों का अस्तित्व
⑩ समाज द्वारा मान्यता

BULANDSHAHR

जाति व वर्ग में अन्तर

① स्थायित्व में अन्तर
② सामाजिक दूरी में अन्तर
③ स्वतन्त्रता की मात्रा में अन्तर
④ प्रकृति में अन्तर
⑤ सदस्यता में अन्तर
⑥ चेतना में अन्तर
⑦ राजनीतिक अन्तर
⑧ व्यावसायिक आधार पर अन्तर
⑨ संस्तरण में अन्तर

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ — सामाजिक गतिशीलता का अभिप्राय सामाजिक समूहों तथा स्तरों के क्रम में एक सामाजिक पद से दूसरे सामाजिक पद में परिवर्तन होना है।

प्रकार

① क्षैतिज या समस्तरीय सामाजिक गतिशीलता
② शीर्ष या विषमस्तरीय सामाजिक गतिशीलता

① आरोही गतिशीलता
② अवरोही गतिशीलता

सोरोकिन के अनुसार → ① अन्तर पीढ़ी गतिशीलता
② अन्तः पीढ़ी गतिशीलता

कारक

① सामाजिक आन्दोलन
② शिक्षा
③ राज्य →
  ① आरक्षण
  ② भूमि सुधार

जाति की विशेषता

① जन्म पर आधारित सदस्यता
② पेशों की निश्चितता
③ खान पान पर प्रतिबन्ध
④ ऊँच नीच की भावना
⑤ समान संस्कृति की मान्यता
⑥ अनिवार्य सदस्यता
⑦ अन्तर्विवाही समूह
⑧ सदस्यों की निश्चित स्थिति
⑨ सदस्यों के निश्चित कार्य
⑩ सामाजिक सम्बन्धों का अभाव
⑪ निश्चित परम्पराएँ

वर्ण एवं जाति में अन्तर

① संख्या
② आधार
③ प्रतिबन्ध
④ अनुलोम विवाह
⑤ प्राचीनता
⑥ संक्रमण
⑦ तर्क का स्थान